E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 25-08-2024
Accepted: 28-09-2024
Published: 03-11-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 2; Issue 4; 2024; Page No. 230-234

सरकारी स्कूलों के शिक्षकों और निजी स्कूलों के शिक्षकों द्वारा अपनाई गई मूल्यांकन प्रणाली की तुलना करना

[1]KM Bhuwaneshwari and [2]Dr. Kuldeep Singh Tomar

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Assistant Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17598416

Corresponding Author: KM Bhuwaneshwari

सारांश

शिक्षा बाल जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है। एक बच्चे के प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा उसके जीवन का मील का पत्थर है जिसमें वह सुंदर भवन का निर्माण करता है। बच्चे का संपूर्ण विकास इसी शिक्षा पर निर्भर करता है। संबंधित साहित्य और विभिन्न स्रोतों की समीक्षा के बाद यह देखा गया है कि प्रारंभिक शिक्षा का मूल उद्देश्य समृद्ध, संभावित, रचनात्मक और अभिनव समाज और एक विकसित राष्ट्र की नींव को मजबूत करना है। इसी कड़ी में प्राथमिक शिक्षा का शुद्ध विकास और विकास सरकारी और निजी स्कूलों की समान जिम्मेदारी है कि वे बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा दें। अन्वेषक अंततः विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि विभिन्न स्तरों पर सरकारी और निजी प्राथमिक विद्यालयों में निम्नलिखित पहलू पर बहुत अधिक अंतर है अर्थात बुनियादी ढांचागत सुविधाएं, शिक्षक योग्यता, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ सरकारी और निजी स्कूलों के बारे में छात्रों के प्रदर्शन और अभिभावकों के विचार। उत्तराखंड में प्रारंभिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर कुछ अध्ययन किए गए हैं लेकिन वर्तमान विषय से संबंधित कोई अध्ययन नहीं किया गया है। इन्हीं कारणों से अन्वेषक ने उत्तराखण्ड राज्य के प्रारंभिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन करने की योजना बनाई। बुनियादी शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पहली अनिवार्यता का उद्देश्य है। यह पहली सीढ़ियाँ हैं जो किसी राष्ट्र के वांछित लक्ष्य को सफलतापूर्वक पार करके सफलतापूर्वक पहुँचती हैं। ऐसा कहा जाता है कि राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ संबंध है, प्राथमिक शिक्षा माध्यमिक और उच्च शिक्षा के समान नहीं है। प्राथमिक शिक्षा की राष्ट्रीय विचारधारा और चरित्र के योगदान का बहुत बड़ा योगदान है। प्राथमिक शिक्षा का संबंध किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष से नहीं, बल्कि पूरी आबादी से होता है। हर कदम पर हर व्यक्ति के जीवन के साथ इसका संपर्क है।

मूल शब्दः प्रारंभिक शिक्षा, विद्यालयों, सुविधाएं, शिक्षक योग्यता, शिक्षण पद्धति

1. प्रस्तावना

भावनाएँ व्यक्तिगत अनुभव हैं जो शारीरिक, संज्ञानात्मक और परिस्थितिजन्य चर। यदि भावनाओं का सही उपयोग किया जाए, तो वे सफल और संपूर्ण जीवन के लिए एक आवश्यक उपकरण हैं। लेकिन अगर भावनाएँ नियंत्रण से बाहर हो जाएँ, तो इसका परिणाम विनाशकारी हो सकता है। दैनिक जीवन में, वे दूसरों के साथ हमारे संबंधों, हमारी आत्म–पहचान और किसी कार्य को पूरा करने की हमारी क्षमता को प्रभावित करती हैं। भावनात्मक प्रक्रिया कोई अलग–थलग घटना नहीं है, बल्कि सामान्य अनुभव का एक घटक है, जो एक ही समय में चल रही अन्य प्रक्रियाओं से लगातार प्रभावित और प्रभावित होती रहती है। भावनाएँ व्यक्तिगत अनुभव हैं जो शारीरिक, संज्ञानात्मक और परिस्थितिजन्य चरों के बीच जटिल परस्पर क्रिया से उत्पन्न होती हैं। प्रभावी होने के लिए, संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को भावनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए, ताकि वे विरुद्ध होने के बजाय उनके पक्ष में काम करें।

विद्यालय दूसरों तक सूचना पहुँचाने के लिए उपलब्ध सबसे बड़ा साधन है। यह व्यक्तियों को परिवर्तन के लिए एजेंट बनने और समाज के उत्पादक सदस्य बनने के लिए सिखाने का सबसे अच्छा प्रशिक्षण मैदान है। फिर भी, विद्यालय ऐसा उन शिक्षकों के बिना नहीं कर सकते जो परिवर्तन लाना चाहते हैं और जिनके पास आवश्यक मानवीय गुण, योग्यताएँ, कौशल और क्षमताएँ हैं। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक का महत्व निर्विवाद है। शिक्षक शिक्षा प्रणाली में सभी मानवीय कारकों में प्रमुख स्थान रखता है, और केवल उनके माध्यम से ही शिक्षा की अंतिम प्रक्रिया होती है। शिक्षक अपनी समस्याओं को परिभाषित करने और अपनी परिस्थितियों और अपनी शर्तों में समाधान खोजने के लिए

विशिष्ट रूप से स्थित हैं। लेकिन स्कूल में जो कुछ भी होता है, उसके बारे में शिक्षकों की धारणाएँ अक्सर जनता की धारणाओं से भिन्न होती हैं। शिक्षक हमेशा सार्वजनिक शिक्षा को जनता की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। इसके अलावा, कक्षा में शिक्षकों की भूमिका बदल गई है, इसलिए, उन्हें स्कूल के दिन के दौरान कई भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं।

आज शिक्षक शिक्षा में नई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिसके लिए शिक्षकों से अधिक प्रयास की आवश्यकता है। शिक्षक समूह के रूप में अन्य व्यवसायों के सदस्यों की तुलना में अधिक असमायोजित नहीं हैं। समायोजन की समस्याएँ सभी समूहों में समान हैं, लेकिन प्रत्येक व्यवसाय में कुछ विशिष्ट समस्याएँ होती हैं। शायद संतोषजनक समायोजन की मुख्य शर्त यह है कि शिक्षकों को अपनी योग्यता पर भरोसा हो और वे अपने व्यवसाय का सम्मान करें। आम तौर पर, शिक्षण मन के उस विकास और परिपक्वता के लिए अनुकूल नहीं है जो व्यक्तिगत संतुष्टि और मूल्य की चेतना के लिए बहुत आवश्यक लगता है। कुछ प्रशासकों का मानना है कि एक वर्ग के रूप में पुराने शिक्षक कम सक्षम हैं, जो संयोगवश यह कहने के बराबर है कि हमारे स्कूल शिक्षकों के विकास के लिए बहुत कुछ नहीं करते हैं। साथ ही, यह भी स्वीकार किया जाएगा कि यदि शिक्षक पदोन्नति की लंबी अवधि की आशा कर सकें और यदि वे अपने चारों ओर बढ़ते विकास और विकास के प्रमाण देख सकें तो उन्हें अपने काम से अधिक संतुष्टि मिलेगी।

मानव यात्रा, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली शिक्षा का नाम है। यह व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में भी मदद करता है और समाज को एकीकृत और संगठित करता है। शिक्षा किसी भी देश या समाज की उन्नति का प्रतिफल है। यह व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास का एक बहुत महत्वपूर्ण और प्रभावी उपकरण है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने लोगों को विकसित करने के लिए शिक्षा का उपयोग करता है ताकि लोग अपने सामाजिक कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें।

1.1 समस्या का विधान

वर्तमान अध्ययन "उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के संदर्भ में निजी और सरकारी विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली के तुलनात्मक अध्ययन" में अन्वेषक ने हरियाणा के सरकारी और निजी विद्यालयों की तुलना सरकारी और निजी स्कूलों की स्थिति, ढांचागत सुविधाओं के विशेष संदर्भ में की है, शिक्षक योग्यता, छात्र शिक्षक अनुपात, नामांकन की स्थिति और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षण रणनीतियाँ, मूल्यांकन प्रणाली, और माता–पिता के विचार जिनके बच्चे सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ रहे थे।

2. अध्ययन का उद्देश्य

1. स्तर पर सरकारी और निजी स्कूलों द्वारा आयोजित सह पाठयक्रम गतिविधियों की तुलना करना।
2. सरकारी और निजी स्कूलों में शिक्षकों द्वारा अपनाई गई शिक्षण रणनीतियों की तुलना करना।
3. सरकारी स्कूलों के शिक्षकों और निजी स्कूलों के शिक्षकों द्वारा अपनाई गई मूल्यांकन प्रणाली की तुलना करना।

3. साहित्य की समीक्षा

एएसईआर (2018) ने 15 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में शिक्षा की अपनी 13वीं वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2018 जारी की। तीसरी कक्षा + में छह राज्यों (हरियाणा, पंजाब, मिजोरम, गुजरात, उत्तर प्रदेश और) में 5 प्रतिशत नामांकन में वृद्धि देखी गई। केरल) सरकारी स्कूलों में। रिपोर्ट के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि 2016 में उच्च विद्यालयों की संख्या में लगभग 13.06 प्रतिशत का विस्तार हुआ। हरियाणा, असम, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में उच्च विद्यालयों के साथ परीक्षण किए गए गांवों की संख्या में भारी वृद्धि अचूक थी। रिपोर्ट ने यह भी संकेत दिया कि हरियाणा, महाराष्ट्र और हिमाचल परदेश के 90 प्रतिशत से अधिक स्कूलों में खेल के मैदान की सुविधा उपलब्ध थी, लेकिन ओडिशा, जम्मू और कश्मीर, झारखंड और बिहार के ज्यादातर स्कूलों में छात्रों के लिए खेल के मैदान की सुविधा नहीं है। ज्यादातर गांवों के स्कूलों में शारीरिक शिक्षा का कोई शिक्षक नहीं था। केवल 5 प्रतिशत विद्यालयों में ही शारीरिक शिक्षा के शिक्षक हैं। रिपोर्ट से पता चलता है कि ज्यादातर विद्यालयों में शारीरिक शिक्षक उपलब्ध नहीं थे। यह भी पाया गया कि निजी स्कूलों का प्रदर्शन सभी पहलुओं में सरकारी स्कूलों की तुलना में बेहतर है। यह भी पता चला कि जम्मू–कश्मीर, बिहार, उड़ीसा और झारखंड के सभी स्कूलों में एक चौथाई से खेल के मैदान तक पहुंच नहीं थी।

सुप्रामण्यम, कुलराजसिंगम, और शर्मिन, (2019) ने "चटगांव शहर, बांग्लादेश में निजी स्कूलों के चयन में माता–पिता के निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक" पर एक अध्ययन किया और अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थेः निर्धारित कारकों का विश्लेषण करना (स्कूल की लोकप्रियता और गुणवत्ता, भविष्य के विकल्प, माता–पिता की वार्षिक आय और माता–पिता की योग्यता) का निजी स्कूल चुनने के माता–पिता के निर्णय पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि स्कूल की लोकप्रियता और गुणवत्ता, भविष्य के विकल्प, माता–पिता की वार्षिक आय और माता–पिता की योग्यता का निजी स्कूलों को चुनने के लिए माता–पिता की पसंद पर महत्वपूर्ण प्रभाव था। अध्ययन के निष्कर्षों ने यह भी संकेत दिया कि स्कूल की गुणवत्ता और निजी स्कूलों की लोकप्रियता के बीच सकारात्मक संबंध था।

मांझी और मल्लिक (2019) ने उड़ीसा राज्य में प्रारंभिक शिक्षा में छात्रों के बुनियादी ढांचे और नामांकन का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने पाया कि स्कूल का बुनियादी ढांचा नामांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह छात्रों को विशेष रूप से लड़कियों को स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित करता है।

4.1 अध्ययन पद्धति

वर्तमान अध्ययन शिक्षकों के संदर्भ में सरकारी और निजी स्कूलों की स्थिति, बुनियादी सुविधाओं, छात्रों के नामांकन और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, सह–पाठयक्रम गतिविधियों, माता–पिता शिक्षक बैठक, मूल्यांकन पैटर्न, द्वारा अपनाई गई शिक्षण रणनीतियों का अध्ययन करने के लिए किया गया था। रुद्रप्रयाग के सरकारी और निजी विद्यालयों के बारे में शिक्षकों और अभिभावकों के विचार।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु इस क्षेत्र में अब तक किए गए शोध अध्ययनों के आधार पर एक उपयुक्त रूपरेखा की पहचान की गई है। शोधों का अध्ययन करने के बाद, शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मानक सर्वेक्षण पद्धति इस अध्ययन के लिए सबसे उपयुक्त है। मानक सर्वेक्षण पद्धति में व्यक्तियों के समूह की प्रकृति, वस्तुओं की संख्या से संबंधित तथ्यों या वर्तमान परिस्थितियों का प्रस्तुतीकरण शामिल है। घटनाओं के वर्ग में आगमन, विश्लेषण, वर्गीकरण, गणना और मापन की प्रक्रिया शामिल है। इस वर्तमान शोध में उन सभी चरणों और विशेषताओं को अपनाया गया है जिन्हें कई लेखकों द्वारा मानक सर्वेक्षण पद्धति के लिए आवश्यक बताया गया है।

4.2 जनसंख्या

शैक्षिक शोधकर्ता के लिए रुचिकर जनसंख्या, सामान्यतः परिमित जनसंख्या होती है जिसे उसमें निहित तत्वों के साथ संयुक्त रूप से परिभाषित किया जा सकता है। इसलिए, शैक्षिक अनुसंधान में जनसंख्या आमतौर पर तत्वों की सीमित संख्या का समुच्चय होती है और ये तत्व मूल इकाइयाँ होती हैं जो एक परिभाषित जनसंख्या का निर्माण करती हैं।

सर्वेक्षण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नमूने द्वारा किया जाता है, लेकिन इस जनसंख्या का सटीक वर्णन करना कठिन हो सकता है। इसलिए, परिभाषित लक्ष्य जनसंख्या के बारे में लिखना आसान है। परिभाषित लक्ष्य जनसंख्या एक संक्रियात्मक परिभाषा प्रदान करती है, जिसका उपयोग जनसंख्या तत्वों की सूची या नमूना ढाँचे के निर्माण में मार्गदर्शन के लिए किया जाता है जिससे नमूना लिया जा सकता है। तत्वों को परिभाषित लक्ष्य जनसंख्या से बाहर रखा जाता है और उन्हें बहिष्कृत जनसंख्या कहा जाता है।

वर्तमान अध्ययन के लिए जनसंख्या को रुद्रप्रयाग क्षेत्र के सरकारी और निजी विद्यालयों के शहरी और ग्रामीण दोनों छात्रों (लड़के और लड़कियां) के रूप में परिभाषित किया गया है,

4.3 नमूनाकरण

चूँकि धन, समय और ऊर्जा की कमी के कारण रुद्रप्रयाग क्षेत्र के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों को अध्ययन में शामिल नहीं किया जा सका, इसलिए संस्थान की जनसंख्या से एक प्रतिनिधि नमूना यादृच्छिक रूप से लिया गया है। इस उद्देश्य के लिए, पहले चरण में क्लस्टर सैंपलिंग का उपयोग किया जाता है। धन, समय और ऊर्जा की बचत के लिए रुद्रप्रयाग में स्थित विद्यालयों का चयन किया जाता है। सरकारी और निजी विद्यालयों का नमूना लेने का पहला कार्य रुद्रप्रयाग क्षेत्र के इन विद्यालयों की सूची प्राप्त करना है। इन विद्यालयों की सूची संबंधित जिलों के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से ली गई है।

हमने रुद्रप्रयाग जिलें क्षेत्र के 40 स्कूलों को चुना। इसके अलावा, हमने सरकारी स्कूलों से चार और निजी स्कूलों से चार स्कूल चुने, जिनमें से दो शहरी क्षेत्र से और दो ग्रामीण क्षेत्र से थे।

हमने रुद्रप्रयाग क्षेत्र के जिलें से 400 छात्रों को लिया, इसमें 40 छात्र सरकारी और 40 छात्र निजी विद्यालयों से थे, जिनमें ग्रामीण क्षेत्र से बीस छात्र और शहरी क्षेत्र से बीस छात्र थे, जिनमें क्रमशः दस लड़के और दस लड़कियाँ शामिल थीं।

5. आँकड़ों का विश्लेषण

तालिका 1: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह–शिक्षण वातावरण के पोषण आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस. डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	20.120	4.687	2.987	**
2.	निजी विद्यालय	300	18.875	3.573		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 1 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (H-L-E) स्कोर का माध्य 20.120 और मानक विचलन 4.687 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (H-L-E-) स्कोर का माध्य 18.875 और मानक विचलन 3.573 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 2.987 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 2: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह शिक्षण वातावरण के अस्वीकृति आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस. डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	18.285	4.613	3.182	**
2.	निजी विद्यालय	300	16.915	3.973		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 2 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (H-L-E) स्कोर का माध्य 18.285 और मानक विचलन 4.613 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (H-L-E) स्कोर का माध्य 16.915 और मानक विचलन 3.915 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 3.182 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 3: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह शिक्षण वातावरण के विचलन आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	18.380	4.059	3.134	**
2.	निजी विद्यालय	300	17.110	4.046		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 3 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा प्राप्तांक का माध्य 18.380 और मानक विचलन 4.059 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा प्राप्तांक का माध्य 17. 110 और मानक विचलन 4.056 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 3.134 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 4: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की गणित में शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	14.940	4.530	11.11	**
2.	निजी विद्यालय	300	20.50	5.520		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 4 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों में गणित में शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 14.940 और मानक विचलन 4.530 था, जबकि निजी विद्यालयों में गणित में शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 20.50 और मानक विचलन 5.520 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 3. 182 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 5: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की सामाजिक अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	16.590	5.158	8.260	**
2.	निजी विद्यालय	300	20.775	4.974		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 5 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 16.590 और

मानक विचलन 4.974 था, जबकि निजी विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 20.775 और मानक विचलन 4.974 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 8.260 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 6: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की हिंदी में शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	17.430	4.09	6.535	**
2.	निजी विद्यालय	300	20.490	5.263		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 6 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 17.430 और मानक विचलन 4.09 था, जबकि निजी विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 20. 490 और मानक विचलन 5.263 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 6.535 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 7: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की कुल शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	50.960	8.869	12.55	**
2.	निजी विद्यालय	300	63.815	11.453		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 7 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों की कुल शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 50.960 और मानक विचलन 8. 869 था, जबकि निजी विद्यालयों की कुल शैक्षणिक उपलब्धि का माध्य 63.815 और मानक विचलन 11.453 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 12.55 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 8: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षिक जागरूकता की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	124.87	20.650	8.075	**
2.	निजी विद्यालय	300	139.92	16.365		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 8 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों की शैक्षिक जागरूकता का माध्य 124.87 और मानक विचलन 20.650 था, जबकि निजी विद्यालयों की शैक्षिक जागरूकता का माध्य 139.92 और मानक विचलन 16.365 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 8.075 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

6. निष्कर्ष

- **शोधार्थी के लिए निहितार्थ:** इस क्षेत्र में शोध अध्ययन करने में रुचि रखने वाले शिक्षा के शोधार्थी के लिए वर्तमान अध्ययन के परिणाम आधारभूत आँकड़ों के रूप में काम करेंगे।
- **निजी विद्यालय के प्रबंधकों के लिए निहितार्थ:** इस अध्ययन के निष्कर्ष निजी विद्यालयों के प्रबंधकों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। उनका उद्देश्य ऐसी शैक्षिक व्यवस्था करना है जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने में मदद मिले।
- **बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों के लिए निहितार्थ:** इस अध्ययन के निष्कर्ष बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। सरकारी विद्यालयों की कमज़ोरियों को दूर करने के लिए, उन्हें सरकारी विद्यालयों के छात्रों के बेहतर प्रदर्शन के लिए निजी विद्यालयों के चरणों को अपनाना चाहिए।
- **नीति निर्माताओं के लिए निहितार्थ:** इस अध्ययन के निष्कर्ष नीति निर्माताओं के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। इन निष्कर्षों के ज्ञान से वे ऐसी नीतियाँ बना सकते हैं जो सरकारी निजी शिक्षा में परिवर्तन ला सकें और समाज में इसके प्रदर्शन को बेहतर बना सकें।

7. सन्दर्भ

1. एडेयेमो, डी.ए. ओयो राज्य, नाइजीरिया में नए माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षणिक आत्म–प्रभावकारिता के पूर्वानुमान के रूप में माता–पिता की भागीदारी, स्कूली शिक्षा में रुचि और स्कूल का वातावरण। इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी ऑफ़ एजुकेशन. 2005;5(3):1-15.
2. अदेयेमो, के.ए. नाइजीरियाई बैंकों में धोखाधड़ी: प्रकृति, गहरे कारण, परिणाम और संभावित उपचार, मेडिटेरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज. 2012;3(2):279-289.
3. अधिआम्बो, विंगा मौरीन, ओडवार, अगाक जॉन और मिल्ड्रेड, ए. आयरे. केन्या के किसुमु जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच स्कूल समायोजन, लिंग और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध, जर्नल ऑफ इमर्जिंग ट्रेंड्स इन एजुकेशनल रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज. 2011;2(6):493-497.
4. अग्रवाल, वी.आर. कुछ संज्ञानात्मक और गैर–संज्ञानात्मक कारकों के संबंध में पठन क्षमता का एक अध्ययन। एशियन जे. साइ.एडु. 1983;11(3):41–44.
5. अग्रवाल, वाई. पी. और सैनी, वी. पी. अध्ययन आदतों के पैटर्न और उपलब्धि एवं माता–पिता की आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति के साथ इसका संबंध, जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन. 1969;5(4):158–164।
6. अगुलाना, जी. जी. नाइजीरियाई किशोरों में पारिवारिक संरचना और व्यवहार संबंधी समस्याओं की व्यापकता, द काउंसलर. 1999;17(1):154–154।
7. अहमन, जे. एस., स्मिथ, एस. और ग्लैक, एम. डी. अध्ययन और दृष्टिकोण सूची के माध्यम से कॉलेज में शैक्षणिक सफलता की भविष्यवाणी करना। शैक्षिक मनोविज्ञान मापन, 1958;18:853–857।
8. अहमत अकबास और अदनान कान जर्नल ऑफ टर्किश साइंस एजुकेशन 2007, (1)।
9. ऐकमैन, एस. और अन्टरहाल्टर, ई. पहुँच से परेः शिक्षा में लैंगिक समानता के लिए नीति और व्यवहार में परिवर्तन। लंदनः ऑक्सफोर्ड। 2005.
10. अजीला, सी और ओलुटोला, ए. (): विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव। इफे जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज. 2007;7(1):31–39।

11. अजीथा, डी. केरल के उच्चतर माध्यमिक छात्रों की रचनात्मकता, बुद्धिमत्ता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण और अंग्रेजी में उपलब्धि के बीच संबंध का एक अध्ययन। अप्रकाशित एम.एड. थीसिस, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम।, 1992.
12. अख्तर ए. एट अल. समस्या आधारित शिक्षण वातावरण में छात्रों की गणित में शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रेरणा का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च. 2011;3(1):306–309।
13. अकिनबॉय, जे.ओ. अध्ययन आदतों में बदलाव, अध्ययन के दृष्टिकोण में बदलाव और शैक्षणिक प्रदर्शन, अप्रकाशित मास्टर थीसिस, इबादान विश्वविद्यालय, इबादान।, 1974.
14. अकिनबॉय, जे.ओ. कैसे अध्ययन करें और महत्वपूर्ण परीक्षाएँ कैसे पास करें; एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, इबादान, मैरीटाइम प्रिंटर्स। 1980.
15. अकोमोलाफे, एम.जे., और ओगुनमाकिन। ए.ओ. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में नौकरी से संतुष्टिः भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यावसायिक तनाव और आत्म–प्रभावकारिता जैसे पूर्वानुमान। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च. 2014;4(3):487–498।
16. अकरम, बुशरा और ग़ज़नफ़र, लुबना गुजरात विश्वविद्यालय, पाकिस्तान के छात्रों की आत्म–प्रभावकारिता और शैक्षणिक प्रदर्शन, एकेडमिक रिसर्च इंटरनेशनल, 2014, 5(1)।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.